ISSN 2278-8808
UGC APROVED SR. NO. 49366
SJIF 2016 = 6.177
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

ग्राम्य समाज के सौन्दर्यात्मक संस्कृति में आधुनिकता का आलम : एक समाजशास्त्रीय विश्लेशण

कविता कन्नौजिया, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, किशोरी रमण स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय मथुरा।

Abstract

प्रस्तुत लेख ''ग्राम्य समाज के सौन्दर्यात्मक संस्कृति में आधुनिकता का आलम : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण ''के अन्तर्गत ग्राम की सांस्कृतिक पहलुओ, लोकपरंपरा, अर्थव्यवस्था, शासनव्यवस्था एवं उसके बदले आयाम आदि तथ्यों पर केंद्रित हैं। इस लेख में प्रयुक्त तथ्यों, आकड़ों का संग्रह विभिन्न द्वितीयक स्रोतों व अवलोकित गुणात्मक तथ्यों पर आधारित विश्लेषणात्मक अध्ययन है।किसी देश के विकास में कला का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं। भारत में गीत-संगीत,नृत्य, नाट्यकला, लोक परम्पराओं, कला प्रदर्शन , धार्मिक संस्कारों एवं अनुठानों के क्षेत्र का एक बहुत बडा संग्रह हैं जो मानवता की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में जाना जाता है। इनके संरक्षण हेतु संस्कृति मंत्रालय ने विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं को क्रियान्वित किया है। जिसका उद्देश्य कला प्रदर्शन, के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों, समूहों एवं सांस्कृतिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। भारत की मूल संस्कृति का दर्शन ग्रामीण लोक संस्कृति में ही मिलता है। ग्रामीण संस्कृति की खासीयत 'आत्मीयता का भाव, सह-असतित्व का सिद्धांत' है। ग्रामीण संस्कृति प्रकृति के गोद में पली -बढ़ी हैं। श्रम की पूजा के साथ पारस्परीक प्रेम की उदान्त भावना इसका लक्ष्य एवं मूल्य आधार है। हमारे लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाएं, लोक त्योंहार ये सब प्रकृति-प्रेम को प्रकट करने वाले हैं। खेतों मं बुआई, कटाई आदि अवसरों पर हमारे पूर्वज मिल-जूल कर जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि और आकाश की महिमा का बखान करते थे। पर्यावरण के प्रति कृतज्ञता उनके रोम-रोम में बसा था। लोक कहावतों व लोक कथाओं में श्रद्धा का भाव झलकता था। मौजूदा दौर में आधुनिकता का आलम यह है कि बाजार के दबदबे व उपभोक्तावादी संस्कृति ने सब कुछ बदल डाला। विज्ञापनों द्वारा ऐसी वस्तुओं के प्रयोग को बढावा दिया जा रहा है जो बिलकुल ही प्राकृतिक संसाधनों के बरबादी कर पर्यावरण को तबाह करने का कृत्य कर रहा है।

Keywords- *ग्राम्य , लोक , संस्कृति , पर्यावरण, आधुनिक*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भारत की कुल आबादी एक अरब पच्चींस करोड़ है। जो विश्व की १७.५ प्रतिशत आबादी के बराबर है। उनमें से ग्रामीण क्षेत्रों में ६५ प्रतिशत आबादी निवास करती है। वर्तमान में कुल ६.३८लाख गाँव है। अर्थात ''भारत गाँव का देश है। '' गाँव भारतीय समाज की सौन्दर्यात्मक संस्कृति है। सौन्दर्यात्मक संस्कृति समाज की सम्पूर्ण संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है। इसमें पौराणिक उपाख्यानों, लोकगीतों, लोक कथाओं, कहावतों, नृत्यकला, अभिनयों, चित्रों तथा मूर्ति कलाओं का मिश्रण होता है। जिसमें प्रत्यक्ष या प्रतीकात्मक रूप से ग्रामीण जनता के जगत संबंधी (विश्व दृष्टि) सामाजिक धारणाएं तथा नैतिक नियम निहित होते है। भारतीय संस्कृति कृषक संस्कृति कहलाती है। यहां के किसान अपनी धरती से अत्यधिक लगाव रखते हैं। यहाँ की उपजाऊ भूमि में मौसम के अनुसार फसलें, फलों के वृक्ष, पुष्प आदि उगाए जाते हैं।

अर्थात खेती पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर है। यहाँ ऋतु गीत गाए जाते है। रोग ग्रस्त होने पर पेड़, पौधें, वनस्पतियों से भाँति-भाँति की औषधियाँ प्रयोग में लायी जाती है। जैसे -खाँसी आने पर तुलसी दल का काढ़ा, चोट लगने पर हल्दी का लेप,चेचक होने पर नीम की पत्ती का रखना , दुग्ध पान कराने वाली माताओं को पीपर, सतावर खिलाना आदि। कलात्मक क्रियाओं में ग्रामीण जनों की सहभागिता का प्रदर्शन त्योहारों, उत्सवों पर देखने पर मिलता है। यहां पर कला का स्वरूप परिवारिक होता है। कला के उपकरण के रूप में शिल्पकला द्वारा उत्पादित वस्तुएं जैसे - नगाड़ा, ढोलक, बाँसुरी, घंटा, मंनजीरा, का उपयोग किया जाता है। सौन्दर्यात्मक कला में प्रकृतिक वस्तुएं जैसे-वृक्षों की शाखाएं मोर के पखं, साँप, शंख का प्रयोग करते थे। जब भी गाँव की बात चलती थी तों एक सुकून भरे, शान्त,सहज ,सादगी पूर्ण वातावरण का आभास मन में उभर जाता है। हरे भरे खेत, हल जोतते किसान, मवेशियों के गले में बजती घंटी, हल जोतते किसान, चौपालों पर हुक्के की चुस्की , गुड़गुड़ में बतीयातें बुर्जुगों के दृश्य साकार होने लगते । खेत-खलिहानों में गाते किसान, हौले-हौले चलती बैलगाड़ियाँ, पनघट पर पानी भरती महिलाएं ये सभी दृश्य हमारे दृष्टि पटल पर अंकित हो जाते थे। कलात्मक क्रियाओं में ग्रामीण जनों की सहभागिता का प्रदर्शन त्योहारों, उत्सवों पर देखने पर मिलता है। यहां पर कला का स्वरूप पारिवारिक होता है। कला के उपकरण के रूप में शिल्पकला द्वारा उत्पादित वस्तुएं जैसे - नगाड़ा, ढोलक, बाँसुरी, घंटा, मंनजीरा, का उपयोग किया जाता है। सौन्दर्यात्मक कला में प्राकृतिक वस्तुएं जैसे-वृक्षों की शाखाएं मोर के पखं, साँप, शंख का प्रयोग करते थे। जब भी गाँव की बात चलती थी तों एक सुकून भरे, शान्त,सहज ,सादगी पूर्ण वातावरण का आभास मन में उभर जाता है। हरे भरे खेत, हल जोतते किसान, मवेशियों के गले में बजती घंटी, हल जोतते किसान, चौपालों पर हुक्के की चुस्की , गुड़गुड़ में बतीयातें बुर्जुगों के दृश्य साकार होने लगते । खेत -खलिहानों में गाते किसान हौले-हौले चलती बैलगाड़ियाँ पनघट पर पानी भरती महिलाएं ये सभी दृश्य हमारे दृष्टि पटल पर अंकित हो जाते थे।

ग्राम्य सौन्दर्यात्मक संस्कृति के तत्व-

१-चित्रकला-अलेखन, नक्काशी, तथा अन्य द्विव आयामी रूप वाली कलाएं ।

२-मूर्तिकला-पदार्थों का उपयोग कर रूप ढालने की कलाएं ।

३-लोककथा-कहावतें,पहेलिया,संगीतमय पद्य।

४- नृत्य, अभिनयकला-मूर्ति तथा लोक कथाएं सम्मिलित है।

कृषि जीवन की प्रक्रियाएं ग्राम्य कला की विषय सामाग्री होती है। लोक गीत, लोकनृत्य, लोक कथाओं, त्योहारों के अवसरों पर बनाये जाने वाले रेखा चित्रों में इनका परिलक्षण होता है। प्रकृति से निकटता के कारण ग्राम्य कला में प्राकृतिक वातावरण की छाप दिखाई देती है। रेखागणीतीय आकृतियां, गाँवों के कलात्मक रचनाओं में उकेरी जाती है। हस्तशिल्प निर्मित वस्त्रों में इनकी छाप दृष्टिगत होती है। ग्रामीण कला असंख्य पीढ़ियों की भावनाओं एवं जीवन की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करती हैं। पहले गाँव की अपनी एक अलग संस्कृति थी, उस संस्कृति के सुरक्षा कवच में ही दिल को सुकून देने वाली नजाने कितनी चीजें सुरक्षित थी। सुख-शान्ति, स्वस्थ्य प्राकृतिक वातावरण और सहकारिता की भावना गाँवों में थी। जब कभी गाँवों में बारात आती थी, तो व पूरे गाँव की बारात होती थी । गाँव के सभी लोग बारात का आतिथ्य सत्कार करना अपना धर्म समझते थे। पहले एक घर का मेहमान पूरे गाँव का मेहमान होता था। पहले गाँव में ईष्या, द्वेष और गन्दी राजनीति का कोई स्थान नही था। ग्रामीण लोग रागनियां , आल्हा और लोक गीतों के माध्यम से ही अपना

मनोरंजन करते थे। गाँव में मनोरंजन के लिए विभिन्न नौटंकी पार्टिया बुलाई जाती थी । पहले गाँव का वातावरण स्वच्छ था क्योंकि दूर-दूर तक कारखाने नही थें। ग्रामीणों का कहना है कि पहले उन्हें कोई डर नहीं था वे मात्र जंगली जानवरों से डरतें थे लेकिन आज गाँव में भी आदमी को आदमी से डर लगने लगा है।

ग्राम्य समाजों की सौदर्यात्मक संस्कृति के विशिष्ट लक्षण-

१-कला धर्म, बौद्धिक क्रियाकलापों दिन प्रतिदिन के कार्यो , कृषि एवं सांस्कृति क्रियाओं में अविच्छिन्न रूप से अंतर्निहित रहती है।

२-कलात्मक क्रियाओं में स्त्री पूरूष बालक-बालिकाएं, सहभागी होते है। श्रोता एवं कलाकारों में ज्यादा भेद नही होता है।

३-कला का रूप मुख्यत; पारिवारिक होता है। कला ग्रामीण जीवन से ओत -प्रोत रहती है, जिसपर परिवारवाद की छाप अंकित रहती है।

४-ग्रमीण समाजों में परम्परागत रूप से कला की तकनीक सरल होती है।

५-ग्रामीण कला के उपकरण प्रायःघर में निर्मित होते है।

६-कृषि ग्रामीण जीवन का आधार व विषय सामाग्री के रूप में होती है।

७-ग्रामीण समाज की प्रकृति से निकटता होने के कारण ग्रामीण कला पर भी प्राकृतिक वातारण की छाप भवनों की सजावट, हस्त-निर्मित वस्त्रों में दिखई देती है।

८-ग्रामीण कलाकृतियों का रूप सामूहिकता से भाव से ओत-प्रोत होता है। ग्रामीण गीत कहानिया नाटक कलाकृतिया ग्रामीण कलाकारों की पीढ़ियों की सामूहिक रचनाएं होती है।

९-ग्रामीण सामाजिक कला में समष्ठि के भाव, आन्नद, आकाक्षाएं तथा स्वप्न प्रबल रूप से प्रकट होते है।

१०- ग्रामीण कला का स्वरूप अव्यवसायिक होता है। ग्रामीण कलाकार अपनी कलात्मक रचनाओं से लाभ उपार्जन की भावना से प्रेरित नही होता।

११-कलात्मक शिल्पकारिता तथा संस्कृति का पीढ़ि दर पीढ़ि प्रायः मौखिक रूप से हस्ताक्षरित होना ग्रामीण कला का मौलिक लक्षण है। परिवारों के वरिष्ठ जन लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाओं एवं हस्तशिल्प का प्रशिक्षण अल्प वयस्कों को प्रदान करते है।

ग्राम्य समाज के सौन्दर्यात्मक संस्कृति में परिवर्तन की प्रक्रिया ब्रिटिश लोगों के आगमन से प्रारम्भ हुई। २०वीं शताब्दी में ग्रामीण सामाजिक संरचना में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। जिसके बाद से ग्रामीण संस्कृति में बदलाव आने लगा है। ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास सामाजिक परिवर्तन का सबसे अहम साधन बना हुआ है। ग्रामीण विकास से तात्पर्य मूल रूप से तीन प्रमुख मुद्दे है ।

१-शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयज, बिजली तथा आवास जैसी सभी मूलभूत सुविधाओं को विकसित करना है ।

२-व्याप्त गरीबी को दूर करने हेतु रोजगार का समुचित अवसर पैदा करना ।

३- देश के शासन/गवर्नेन्स में ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु उनमें जागरूकता और चेतना का संचार करना।

ग्रामीण समाज में अब कला सामूहिक क्रिया न होकर विशिष्ट क्रिया बनती जा रही है। पूँजीवाद तथा नगरीकरण के कारण ग्रामीण कला का व्यवसायीकरण तीव्र गति से प्रारम्भ हो गया है। कलात्मक सृजन का मुख्य लक्ष्य आर्थिक लाभ उत्पन्न करना होता जा रहा है। परिवर्तनशील ग्रामीण समाजिक संरचना को समझनें हेतु गाँवों की सौन्दर्यात्मक संस्कृति का गहन अध्ययन आवश्यक है क्योंकि इसमें क्षेत्रीयता एवं विष्ठिता पायी जाती है। इसलिए इनका श्रेणीगत विभाजन करके प्रत्येक इकाई का अलग-अलग अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

भारत के नव निर्माण में हमे ग्रामीणों के सहयोग लेने की परम आवश्यता है। ग्राम्य सौन्दर्यात्मक संस्कृति में स्वशासीत संस्था के रूप में समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई ग्राम पंचायत है। ग्राम पंचायत का इतिहस सैकड़ों वर्ष पुराना है। 'पंचायत' शब्द का प्रयोग पाँच व्यक्तियों की एक सभा के लिए होता था। जिसे पंच पाँच संज्ञा दी गई। जिसे पंच परमेंश्वर भी कहा जाता था। 'पंच' भी ग्राम्य की सौन्दर्यात्मक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। जो सामूहिकता को दर्शाता है। सार्वजनिक न्यायिक व्यवस्था के अर्न्तगत पंचायतों को स्थानीय स्वशासन एवं राष्ट्रवादी भावना जागृत करना है। भारत के नवनिर्माण में हमें ग्रामीण के सहयोग लेने की परम आवश्यकता है। क्योंकि इनमें लोकतांत्रिक चेतना आये बिना लोकतंत्र की जड़े मजबूत नहीं होगी। हमारे राष्ट्र को सुदृढ़ स्वस्थ्य, एवं समृद्ध बनाने के लिए। आवश्यक है कि लोकतंत्र गाँव को समझें, वैज्ञानिक विधियों से कृषि यन्त्र को और अधिक उन्नत करने की कला सीखे। गाँव के सौन्दर्यात्मक संस्कृति को उन्नत करने हेतु गाँव का विकास किया जा रहा है। गाँव के हस्त शिल्प कलाओं का प्रदर्शन हॉट के माध्यम से किया जा रहा है। सरकारों के द्वारा गाँव तक राजमार्ग, बिजली, पानी पहुँचाने , संचार की सुविधा , आवासीय सुविधा , स्वास्थ्य शिक्षा , रोजगार के अवसर , उत्पादकों की बिक्री की व्यवस्था कराया जा रहा है।

ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन में पंचायतीराज संस्थाओं ने सराहनीय योगदान दिया है। पंचायतीराज संस्थाओं में नये-नये और छोट-छोटे पदो पर चुने गये। प्रतिनिधियों की संख्या गाँवों में लगातार बढ़ती जा रही है। विभिन्न तरह के विकास के प्रयासों से ग्रामीण परिवेश में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। जो प्रचीन सामाजिक दर्शन/संरचना से काफी भिन्न है। अब ग्रामीण लोगों में शहरों जैसी प्रवृति आ रही है। जिससे ग्रामीण सामाजिक ताना-बाना एंव सामाजिक समरसता खत्म हो रही है। सामाजिक मूल्यों में कमी आ रही है। गाँवों में विभिन्न तरह के धार्मिक विश्वास और संस्कृति का मिश्रण होता है। वर्तमान में ग्रामीण विवाह भी अन्तर्जातीय व्यवस्था पर आधारित हो चुका है। व्यक्ति के मूल्य जाति पर निर्भर न होकर शिक्षा एवं उपलब्धि इत्यादि चीजों पर केन्द्रित हो गया है। जजमानी व्यवस्था पूरी तरह समाप्त हो गई है। नवीनतम शोध कार्यों से भी भली भाँति परिचित है और आवश्यकता पड़ने पर इन्हें अपना भी रहे है। इन्हीं कारणों से पैदावार में वृद्धि हो रही है। आज लगभग हर गाँव में बिजली पहुँच चुकी है। संचार क्रान्ति के चलतें लगभग हर ग्रामीण के पास मोबाइल भी उपलब्ध है। ग्रमीण अंचलों में बैंक की शाखाएं खोली जा रही है। आज गाँव लगातार विकास की ओर अग्रसर है।

ग्राम पंचायतें ग्रामों में स्वस्थ्य नेतृत्व का विकास करती है । पंचायतों को माध्यम से योजनाओं का क्रियान्वयन होता है। 'गाँधीजी' का कथन है कि -''यदि भारत की जनता के लिए स्वराज्य का कोई अर्थ है तो प्रारम्भिक सत्ता के रूप में ग्राम पंचायतों के विकास को सबसे अधिक महत्व देना होगा।

'नेहरूजी' ने हिन्दूस्तान की समस्याओं पर विचार करते हुए। कहा है- ''हम दलीत जातियों ,आदिवासियों तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए अन्य वर्ग को उपर उठाये । गरीबी और बेकारी के खिलाफ लड़ाई और लोगों की आर्थिक उन्नति, ये हमारे लिए महत्वपूर्ण उद्देश्य बन जाते है।

श्री ढेवर के अनुसार – '' गाँव पंचायतें छोटे प्रत्येक स्थान पर ग्रामीणों को जनतंत्र की शिक्षा देने तथा उन्हें तथा उन्हें अपना विकास स्वम करने का प्रशिक्षण देने वाला सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। इनमें ग्रामीण लोकतंत्र के सभी गुण विद्यमान है। ग्राम पंचायतों के माध्यम से सरकार ग्रामों में संक्रमण रोगों से बचाव व स्वच्छता के प्रबन्ध हेतु नालियों एवं गड्ढों का निर्माण यातायात साधनों की व्यवस्था , स्वच्छ जल की व्यवस्था तथा प्राकृतिक प्रकोपों से बचाव हेतु आर्थि क सहायता भी करती है। ग्रामीण जीवन में छोटे-छोटे उद्योगों को स्थापित कर ग्रामीणों की आर्थिक दशा सुधार के प्रयास किये जा रहे है। सिंचाई के लिए ग्रामीणों को अधिकाधिक सुबिधाये प्राप्त हो रही है। इसी प्रकार प्रसूति तथा चिकित्सा सुविधा के माध्यम से माताओं तथा बच्चों को स्वस्थ बनाने में पंचायतों ने महत्वपूर्ण कार्य किये है। इस प्रकार ग्राम पंचायते ग्रामीण स्वशासन हेतु कार्य पालिकाओं के रूप में कार्य करती है। पंचायतों को प्रधान 'ग्रामसभा' का भी प्रधान माना जाता है। ग्रामसभा द्वारा निर्वाचित ये ग्राम पंचायतें पाँच वर्ष के लिए चुनी जाती है। पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। ग्रामीण महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में उचाँई तक न पहुँचने पर भी उपमें अनुभव जन ज्ञान की स्थिति प्रशंसनीय है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रभाव राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। सरकार विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से गाँव में बुनियादी सुविधाओं और आधारभूत संरचनाओं के निर्माण द्वारा ग्रामीण भारत की तस्बीर बदलने के लिए ग्रामीण समाज के कमजोर पिछड़े वर्गों के लिए कल्याणकारी और विकासउन्मुख योजनाओं को ला रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों जैसी सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए 'पूरा' अर्थात 'प्रोवाइडिंग अर्बन एमिनीटिज इन रूरल एरियाज ' कार्यक्रम चलाया जा रहा है। आधुनिक तकनीक और जीवन शैली की धमक ग्राम्य संस्कृति में साफ दिखाई पढ़ने लगी है। आज के बदलते ग्रामीण परिदृश्य और आधुनिकता से उपजी स्थितियां गाँव की तस्बीर बदल रही है। खेत खलिहानों और गाँव की गलियों में अब रागनियां सुनाई नही पड़ती है। रागनियों का स्थान फिल्मों के गीत गानों ने ले लिया। कच्चे मिट्टी के घर पक्के मकानों में तब्दील हो रहे है। गाँव की चौपालें अब फिकी पड़ने लगी है। आज गाँवों में एक वर्ग तो ऐसा जिनके घरों सुख सुबिधाओं के लगभग सभी साधन मौजूद है। दूसरा वर्ग ऐसा है जो मजदूरी पर प्रतिदिन पेट भरता है। औद्योगीकरणके चलते जंगलों और खेतों में बड़ी संख्या में कारखानें स्थापित हो रहे है। आज किसान नवीनतम तकनीक और औजारों को अपना रहे है। वे कृषि के क्षेत्र में दिन पर दिन हो रहे नवीनतम शोध कार्यों से भी भली भाँति परिचित है और आवश्यकता पड़ने पर इन्हें अपना भी रहे है। इन्हीं कारणों से पैदावार में वृद्धि हो रही है। आज लगभग हर गाँव में बिजली पहुँच चुकी है। संचार क्रान्ति के चलतें लगभग हर ग्रामीण के पास मोबाइल भी उपलब्ध है। ग्रमीण अंचलों में बैंक की शाखाएं खोली जा रही है। आज गाँव लगातार विकास की ओर अग्रसर है। पंचायतों के कार्यो से ग्रामीण समाज में जितने सुधार की अपेक्षा है, यदि उसकी समीक्षा की जाय, तो अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति नही हो पायी । क्योंकि पंचायतों में अधिक प्रभावशाली नेता नही आगे आते पंचायतों पर अर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों का ही अधिकार रहता है, जो कि निर्बल लोगों का शोषण करने से नही चुकतें। इसके बावजूद यह मान सकते है कि पंचायतीराज से ग्रामीण जनता के मन में विकास की भावना जाग्रत हुई है। महिलाओं एवं कमजोर वर्गो की भागीदारी सुनिश्चित होने से सामाजिक परिवर्तन भी प्राप्त हो रहे है।

आधुनिक तकनीक और जीवन शैली की धमक ग्राम्य संस्कृति में साफ दिखाई पड़ने लगी है। आज के बदलते ग्रामीण परिदृश्य और आधुनिकता से उपजी स्थितियां गाँव की तस्बीर बदल रही है। खेत-खलिहानों और गाँव की गलियों में अब रागनियां सुनाई नही पड़ती है। रागनियों का स्थान फिल्मों के गीत गानों ने ले लिया। कच्चे मिट्टी के घर पक्के मकानों में तब्दील हो रहे है। गाँव की चौपालें अब फिकी पड़ने लगी है। आज गाँवों में एक वर्ग तो ऐसा जिनके घरों सुख सुबिधाओं के लगभग सभी

साधन मौजूद है। दूसरा वर्ग ऐसा है जो मजदूरी पर प्रतिदिन पेट भरता है। औद्योगीकरण के चलते जंगलों और खेतों में बड़ी संख्या में कारखानें स्थापित हो रहे है। आज किसान नवीनतम तकनीक और औजारों को अपना रहे है। वे कृषि के क्षेत्र में दिन पर दिन हो रहे अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति नही हो पायी। क्योंकि पंचायतों में अधिक प्रभावशाली नेता नही आगे आते पंचायतों पर अर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों का ही अधिकार रहता है, जो कि निर्बल लोगों का शोषण करने से नही चुकतें। इसके बावजूद यह मान सकते है कि पंचायतीराज से ग्रामीण जनता के मन में विकास की भावना जाग्रत हुई है। महिलाओं एवं कमजोर वर्गो की भागीदारी सुनिश्चित होने से सामाजिक परिवर्तन भी प्राप्त हो रहे है। ७३ वें संशोधन के बाद जब से पंचायतों को केन्द्र एवं सम्बन्धित राज्य सरकार से पर्याप्त धनराशि दोनों सुनिश्चित हुआ है। पंचायतें अपने कार्यो का उत्तरदायित्व समझने लगी है। जिससे ग्रामों में परिवर्तन की लहर दिखाई पड़ने लगी है। पंचायतों में मद्यनिषेध ,भूमि संरक्षण, जलसंसाधन ,सर्वशिक्षा अभियान के प्रति विशिष्ट अधिकार मिलने से ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन होना स्वभाविक हो जाता है। पंचायती राज के द्वारा संचार ढंग से कार्य किये जाने पर अवश्य ही हमारे गाँव स्वस्थ, समृद्ध एवं सशक्त गाँव बनेगें तथा भारत जैसे लोकतंत्र को सही मायने में मजबूत करेगें। वैज्ञानिक युग हमारी ग्राम्य संस्कृति का स्वरूप बदलता जा रहा हैं गाँव नगरों में बदल रहे है। नये-नये कारखाने, उद्योग फक्ट्रीयां स्थापित किए जा रहे है। विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक उपकरणों का महत्व बढ़ता जा रहा है। ग्रामीण संस्कृति में प्रयुक्त छोट-छोटे उपकरणों, हस्तशिल्प के छोटे-छोटे उद्योगों को विस्थापित कर रहे हैं । लोक गीतों के स्थान पर पाश्चात्य गायन, लोक नृत्य के स्थान पर डिस्कों का प्रचलन बढ़ गया है। गांव में किसान ऋतुओं के अनुसार फसल बोता उगाता और काटता है और ऋतु संबंधी गीत -कजली, फगुआ, चैत्रा और बारह मासां गीत गाये जाते है। बाद्य यन्त्रों में बांसुरी जो बांस से निर्मित होती है, वीणा जो वृक्ष के तना से निर्मित होती है आदि प्रमुख वाद्य यन्त्र बजाये जाते है। प्रकृति में रचि बसी यह सौन्दर्यात्मक संस्कृति विलुप्त हो रही हैं। यह संस्कति प्राकृतिक से कृत्रिम हो गई है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से तीब्र ध्वनी से बनजे वाले वाद्य यन्त्रों, चीखतें स्वर में लाउड स्पीकर, माईक, इलेक्ट्रानिक ब्रूफर साउण्ड वाले बड़े-बड़े स्पीकर आदि संयंत्रों में गाये जाने वाले गीतो से ध्वनि प्रदूषण का खतरा बढ़ता जा रहा है। आधुनिकतावादी संस्कृति में औद्योगिक कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट, भारी धत्विक पदार्थ बहाये जा रहे है। जो गाँव के पशुओं को नुकसान पहुँचा रहा है। वातावरण को नियन्त्रित करने वाले यन्त्र रेफ्रिजरेटर ए.सी. आदि अब गाँवों में भी प्रयोग किए जा रहे है। इनसे निकलने वाला अपशिष्ट, दूषित गैस वायुमण्डल में घुल जाते है। और ओजोन गैस के क्षरण का कारण बनते है इनके क्षरण से पृथ्वी के जीव जन्तुओं और पेड़ पौधों को नुकसान पहुँच रहा है। अतः हमें उस संस्कृति से बचना होगा जो प्रकृति का दोहन करना जानती है और उससे भारतीय संस्कृति को विलुप्त होने से बचाना होगा जिसमें प्रकृति प्रेम कूट-कूट कर भरा है, वह है ग्राम्य की सौन्दर्यात्मक संस्कृति।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

१-सिंह परमेश्वर, २००१, प्रकृति, मानव एवं पर्यावरण, पृष्ठ ८०
२-ग्रोवर, बी.एल.एवं यशपाल,१९९९, आधुनिक भारत का इतिहास एस.चन्द्र एण्ड लि. नई दिल्ली।
३-भारत २०१२ प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
४-मुखर्जी, डी.पी., १९४८/१९७९, सोशियोंलॉजी आफ इण्डियन कल्चर, रावत पब्लिकेशन जयपुर।
५-देसाई, ए.आर., (अनु. हरिकृष्ण रावत), १९९९ भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, रावत पब्लिकेशन जयपुर।
६-दूबे, एस.सी. (अनु. योगेश अटल), २०००, भारतीय ग्राम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
७-टायलर, एडवर्ड बी., १८७१/१९८५, प्रिमिटिव कल्चर रिसर्चेज आने टू द डवलपमेंन्ट आफ मैथडोलॉजी फिलासफी रिजिनल, आर्ट, कल्चर, वाल्यूम- २ रिजिनल इन प्रिमिटिव कल्चर, मास स्मिथ, ग्लूकास्टर।
८-मजूमदार, डी.एन.,१९५८, काश्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इण्डियन विलेज, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।